'विष्णुपुराण' में नदियों का माहात्म्य

Mr. Shivam K. Dave
Research Scholer
M. B. Arts & Commerce College,
Gondal

भारतीय संस्कृति में नदियों का स्थान केवल जल स्रोत के रूप में नहीं, अपितु जीवन, धर्म और मोक्ष के साधन के रूप में प्रतिष्ठित है। पुराण साहित्य में नदियों का माहात्म्य विशेष रूप से प्रतिपादित हुआ है। विष्णुपुराण इस परंपरा का प्रमुख ग्रन्थ है, जिसमें नदियों को दिव्य शक्ति, पवित्रता और जीवन के आधार के रूप में वर्णित किया गया है। भारतीय संस्कृति में नदियों का स्थान अत्यंत पूज्य और पवित्र माना गया है। नदियाँ केवल भौगोलिक धाराएँ नहीं, बल्कि भारतीय जीवनदर्शन, आस्था, धर्म और संस्कृति की जीवनरेखा हैं। वे मानव सभ्यता की जननी हैं- जिनके तटों पर नगर बसे, संस्कृतियाँ विकसित हुईं और आध्यात्मिक चेतना का प्रसार हुआ। वैदिक युग से ही जल को 'जीवन' कहा गया है और नदियों को 'माता' के रूप में वंदना की गई है। ऋग्वेद में गंगा, यमुना, सरस्वती, सिन्धु आदि नदियों की स्तुतियाँ यह प्रमाणित करती हैं कि नदियों को दिव्य सत्ता का रूप माना गया है। 'अम्बितमे, नदितमे, देवितमे सरस्वति'- इस वैदिक उद्घोष से स्पष्ट है कि नदी के प्रति श्रद्धा केवल धार्मिक नहीं बल्कि दार्शनिक भी है।

भारत की नदियाँ केवल जलधाराएँ नहीं, अपितु धर्म, दर्शन और संस्कृति की संवाहक है। गंगा को मोक्षदायिनी, यमुना को प्रेम और भक्ति की प्रतीक, सरस्वती को ज्ञान की धारा कहा गया है। पुराणों, उपनिषदों, रामायण, महाभारत और कालिदास जैसे कवियों के साहित्य में नदियों की पवित्रता, सौन्दर्य और महिमा का विस्तृत वर्णन मिलता है। नदियाँ पापों का शोधन करती है, जीवन में पवित्रता का संचार करती है और व्यक्ति को ईश्वर के समीप ले जाती है। वास्तव में नदियाँ भारतीय संस्कृति की आत्मा हैं वह धरती को सींचती हैं, लोगों को पोषित करती हैं और आत्मा को शुद्ध करती हैं। आज जब नदियाँ प्रदूषण और अतिक्रमण की समस्या से जूझ रही हैं तब उनके संरक्षण का अर्थ केवल पर्यावरण रक्षा नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक अस्मिता की रक्षा भी है। नदियों का माहात्म्य यही सिखाता है कि जल ही जीवन है और नदियाँ उस जीवन की अमर धाराएँ हैं।

'विष्णुपुराण' का संक्षिप्त परिचय :

'विष्णुपुराण' अठारह महापुराणों में प्रमुख है। यह छह अंशों (अंकों) में विभक्त है और इसमें लगभग 23,000 श्लोक है। वर्तमान में कुछ प्रतों में 7,000 श्लोक संख्या भी मिलती है। महर्षि पराशर और उनके शिष्य मैत्रेय के संवाद रूप में इसकी रचना मानी जाती है। इसमें ब्रह्मांड की उत्पत्ति, भूगोल, वंशावली, धर्मशास्त्र, योग तथा नदियों का माहात्म्य वर्णित है। यह ग्रन्थ वैष्णव मत का आधारस्तंभ माना जाता है, जिसमें भगवान विष्णु को सृष्टि के पालनकर्ता और समस्त विश्व के परम कारण के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। महर्षि पराशर द्वारा रचित यह पुराण वेदों का सार और भक्तिपथ का मार्गदर्शक है। इसमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष- इन चार पुरुषार्थों का समन्वित निरूपण किया गया है।

'विष्णुपुराण' में सृष्टि की उत्पत्ति, विभिन्न कल्पों का विवरण, विष्णु के अवतारों की गाथा, देवताओं की महिमा, व्रत-उपवासों के विधान, तीर्थों और नदियों का महत्त्व तथा मानव जीवन के आदर्श आचरण का विस्तृत वर्णन मिलता है। इसकी भाषा संस्कृत और शैली गंभीर, दार्शनिक तथा भावपूर्ण है। यह ग्रन्थ केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, दर्शन और आचार का जीवंत दस्तावेज़ है।

'विष्णुपुराण' का मुख्य उद्देश्य यह है कि मनुष्य अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए परमात्मा विष्णु में श्रद्धा रखे, भक्ति के मार्ग से अपने जीवन को पवित्र करे और अंततः मोक्ष की प्राप्ति करे। इस प्रकार यह पुराण भारतीय अध्यात्म, भक्ति और संस्कृति का अमूल्य निधि स्वरूप ग्रंथ है।

'विष्णुपुराण' में नदियों का सांस्कृतिक एवं धार्मिक महत्त्व :

'विष्णुपुराण' में नदियों को 'पावनी' और 'तीर्थस्वरूपा' कहा गया है। इनका जल पापों को हरने वाला, पुण्यदायक और मोक्षदायी माना गया है।

गङ्गा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदा सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥[1]

उक्त श्लोक में गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु और कावेरी का स्मरण करके केवल जल में उनकी उपस्थिति से स्नान का पुण्य बताया गया है । भारतीय संस्कृति में नदियाँ केवल जलधाराएँ नहीं, बल्कि जीवन, आस्था और सभ्यता की अधिष्ठात्री देवियाँ मानी गई हैं। वेदों से लेकर पुराणों और महाकाव्यों तक नदियों का उल्लेख पवित्रता, मातृत्व और जीवनदायिनी शक्ति के रूप में हुआ है। गंगा, यमुना, सरस्वती, गोदावरी, नर्मदा, कावेरी आदि नदियाँ भारतीय जनमानस में केवल भौगोलिक संस्थाएँ नहीं, अपितु देवीस्वरूप पूजनीया है। इनका जल मोक्षदायक माना गया है और स्नान, दान, तीर्थयात्रा जैसी धार्मिक क्रियाओं से इनका गहरा संबंध स्थापित हुआ है। नदियाँ भारतीय लोकजीवन, कृषि, अर्थव्यवस्था, साहित्य, संगीत और कला के प्रत्येक आयाम में संस्कारों का स्रोत रही हैं। इस प्रकार नदियों ने न केवल भौतिक जीवन को समृद्ध किया बल्कि भारतीय संस्कृति के आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों को भी पोषित किया है।

'विष्णुपुराण' में गंगा का माहात्म्य:

गंगा को विष्णु के चरणों से उत्पन्न कहा गया है । जब त्रिविक्रम रूप में विष्णु ने तीन पग पृथ्वी को नापा, तब उनके पाद से गंगा प्रवाहित हुई । इसीलिए गंगा को 'विष्णुपादोत्पन्ना' कहा गया है-

विष्णोः पादोद्भवा देवी सर्वतीर्थमयी नदी।[2]

गंगा का जल त्रिगुणात्मक- शुद्धि, मोक्ष और पुण्य तीनों का दाता माना गया हैं। विष्णुपुराण में 'गंगा' का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है । गंगा को दिव्य लोक से अवतरित पवित्र नदी कहा गया है, जो त्रिलोकी को पावन करने वाली, पापहरिणी तथा मोक्षप्रदायिनी है । विष्णुपुराण के अनुसार, गंगा का उद्गम भगवान विष्णु के चरणों से हुआ है अतः इसे 'विष्णुपदी' कहा गया है-

विष्णोः पदोद्भवा गङ्गा त्रिभुवनपवित्रिणी ।
पतितानां च पापानां त्राता भवति नित्यदा ॥
सा हि विष्णोः पदोद्भूता गङ्गा लोकेषु विश्रुता ।
त्रैलोक्यपावनी पुण्या पापघ्नी मोक्षदायिनी ॥[3]

गंगा भगवान विष्णु के चरणों से उत्पन्न हुई है, इसलिए वह त्रिभुवन को पवित्र करने वाली है । वह पापों का नाश करने वाली तथा समस्त प्राणियों को मोक्ष देने वाली कही गई है । विष्णुपुराण में गंगा का वर्णन केवल एक पवित्र नदी के रूप में नहीं, बल्कि दिव्य शक्ति के रूप में हुआ है। जब भगवान वामन ने अपने चरणों से ब्रह्मांड को नापा तब उनके चरणों का स्पर्श पाकर गंगा प्रकट हुई। इस प्रकार वह 'विष्णुपदी गंगा' कहलाती है । यह नदी तीनों लोकों में प्रवाहित होकर स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल- तीनों का उद्धार करती है। विष्णुपुराण में कहा गया है कि गंगा का जल स्पर्श करने मात्र से मनुष्य के जन्म-जन्मांतर के पाप नष्ट हो जाते हैं और उसे मोक्ष प्राप्त होता है।[4]

'विष्णुपुराण' में अन्य नदियों का वर्णन :

'विष्णुपुराण' में केवल गंगा ही नहीं बल्कि अन्य पवित्र नदियों- यमुना, सरस्वती, गोदावरी, नर्मदा, सिन्धु, कावेरी, ताप्ती, वेणा, चर्मण्वती, इरावती आदि का भी उल्लेख मिलता हैं।

यमुना च सरस्वत्यौ चर्मण्वती च गोदावरी ।
नर्मदा सिन्धुः कावेरी च पुण्या भारतभूध्रुजः॥[5]

इन नदियों को 'भारतीभूमेः रक्तवाहिन्यः' कहा गया है अर्थात् भारत भूमि की जीवनधाराएँ। विष्णुपुराण विशेषतः द्वितीय अंश, पंचम अध्याय से सप्तम अध्याय तक में नदियों का अत्यन्त विस्तृत और धार्मिक वर्णन प्राप्त होता है। गंगा, यमुना, सरस्वती जैसी प्रमुख नदियों के अतिरिक्त इसमें अनेक अन्य नदियों का उल्लेख उनके भौगोलिक, पौराणिक तथा आध्यात्मिक महत्त्व सहित किया गया है । नीचे प्रमुख नदियों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत है-

(1) सरस्वती नदी :

विष्णुपुराण में सरस्वती को ज्ञान और तपस्या की अधिष्ठात्री देवी कहा गया है। कहा गया है कि- सरस्वती "त्रिषु लोकभवन्तु" अर्थात् तीनों लोकों में प्रवाहित होती है। यह नदी वैदिक ऋषियों के यज्ञों की साक्षी रही है। सरस्वती का वर्णन "सप्तसिंधवः" समूह में भी आता है।

सरस्वत्याश्च तीरेषु नित्यं स्नानं समाचरेत् ।[6]

(2) गोदावरी नदी :

गोदावरी को 'दक्षिणगंगा' के नाम से सम्बोधित किया गया है । विष्णुपुराण में इसका उल्लेख उस पुण्यभूमि के रूप में है जहाँ भगवान श्रीराम ने अपने वनवास के समय निवास किया। गोदावरी में स्नान करने से पापों का नाश होता है और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

गौतमस्याश्रमं पुण्यं गोदावरीति विश्रुता ।[7]

(3) नर्मदा नदी :

विष्णुपुराण में नर्मदा का विशेष महत्त्व बताया गया है। इसे 'रुद्रकन्या' कहा गया है और इसके जल में स्नान करने से भगवान शिव की कृपा प्राप्त होती है।

नर्मदा दर्शनादेव पातकं नश्यति ध्रुवम् ।[8]

(4) कावेरी नदी :

कावेरी का उल्लेख दक्षिण भारत की पवित्र नदियों में किया गया है । विष्णुपुराण में इसे पुण्यप्रद, मोक्षदायिनी और 'कन्यातीर्थ' के रूप में वर्णित किया गया है।

कावेरी नाम या देवी दक्षिणे जनपदेषु च ।[9]

(5) सरयू नदी :

यह नदी अयोध्या नगरी की जीवनरेखा मानी गई है। विष्णुपुराण में कहा गया है कि यह नदी प्रभु श्रीराम के लोक में प्रवेश का मार्ग बनी।

सरयू तीरे रम्ये च रामस्य नृपतेः पुरा ।[10]

(6) सिन्धु नदी :

सिन्धु का वर्णन सप्तसिंधवः के रूप में किया गया है। विष्णुपुराण में कहा गया है कि यह नदी हिमालय से निकलकर पश्चिम दिशा में बहती हुई समुद्र में मिलती है।

हिमवतः प्रवृत्ता च सिन्धुराख्या महानदी ।[11]

(7) ताप्ति नदी :

ताप्ती को सूर्यकन्या कहा गया है। विष्णुपुराण में उल्लेख है कि यह नदी अपने जल से पापों का दाह कर देती है, इसलिए इसे 'ताप्ति' नाम मिला।

सूर्यतनया तपती नाम नदी पुण्यदा शुभा ।[12]

(8) शतद्रु और विपाशा :

विष्णुपुराण में पंजाब क्षेत्र की नदियों का भी उल्लेख है। शतद्रु (सतलज) और विपाशा (ब्यास) का नाम सप्तसिंधवः के समूह में मिलता है।

शतद्रुश्च विपाशा च तदन्या सप्तसिन्धवः।[13]

(9) कृष्णावेणी (कृष्णा) नदी :

कृष्णा नदी को विष्णुपुराण में अत्यन्त पवित्र दक्षिणी नदी कहा गया है। यह नदी पौराणिक कथाओं में रुक्मिणी विवाह प्रसंग से भी जुड़ी है।

कृष्णावेणी च पुण्या च दक्षिणे च महापगा ।[14]

(10) गंडकी नदी :

गंडकी नदी को विष्णुपुराण में शालिग्राम शिला की उत्पत्ति का स्थान कहा गया है। यह नदी विष्णुभक्तों के लिए विशेष पवित्र मानी जाती है।

गण्डकी नाम या पुण्या तत्र शालग्रामसंभवः।[15]

'विष्णुपुराण' में नदियाँ केवल भौगोलिक जलधाराएँ नहीं हैं, बल्कि धर्म, पुण्य, मोक्ष और आध्यात्मिक साधना की प्रतीक है। प्रत्येक नदी किसी न किसी देवता, ऋषि या तपोभूमि से जुड़ी हुई है। इस प्रकार, पुराणकार व्यास जी ने नदियों के माध्यम से भारतीय संस्कृति की पवित्रता और जीवन के दैवीय स्वरूप को प्रकट किया हैं।[16] विष्णुपुराण में जम्बूद्वीप के भूगोल में नदियों का विस्तृत उल्लेख है । भारतवर्ष को पुण्यभूमि कहते हुए कहा गया है कि यहाँ की नदियाँ दिव्य हैं क्योंकि वे यज्ञ, तीर्थ और तपस्या के केन्द्र है। भारते नद्यः पावन्यः पुण्यतीर्थोपशोभिताः ।[17]

नदियाँ केवल भौतिक जलधाराएँ नहीं अपितु 'दिव्य चेतना' की प्रतीक हैं । विष्णुपुराण में गंगा को 'मोक्षमार्गिणी' कहा गया है । गंगा का जल विष्णु के चरणों का प्रतीक है, जो भक्ति और ज्ञान दोनों का संयोग कराता हैं। नदी स्नान का तीर्थ माना गया है। विष्णुपुराण में कहा गया है कि जो व्यक्ति नदियों में स्नान कर श्रद्धा से दान देता है, वह स्वर्ग को प्राप्त करता है।

नद्यः सर्वतीर्थमयाः पावयन्ति महीतलम् ।
तासां स्नानं हि पुण्यानां फलं ददाति नित्यशः ॥[18]

विष्णुपुराण नदियों को 'लोकसंवर्धिनी' बताता है-वे जीवन, कृषि, व्यापार, और आध्यात्मिक कल्याण

का माध्यम हैं। उनका संरक्षण धर्म के समान महत्त्वपूर्ण बताया गया है।

निष्कर्ष:

'विष्णुपुराण' में नदियाँ केवल प्राकृतिक जलधारा नहीं, बल्कि दिव्य स्त्री स्वरूप, धर्म की वाहक और मोक्षदायिनी के रूप में प्रतिष्ठित हैं। गंगा, यमुना, सरस्वती आदि नदियाँ भारतीय सभ्यता की आध्यात्मिक धारा का प्रतीक हैं। इनका माहात्म्य यह बताता है कि भारतीय दृष्टि में प्रकृति और परमात्मा में कोई भेद नहीं- दोनों एक ही चेतना के रूप हैं। नदियों की महिमा अत्यंत व्यापक और महत्त्वपूर्ण हैं। इन्हें कई कारणों से 'माँ' का दर्जा दिया जाता है। विश्व की अधिकांश प्राचीन सभ्यताएँ (जैसे सिंधु घाटी, मेसोपोटामिया) नदियों के किनारे ही विकसित हुईं। नदियाँ बस्तियों को बसाने और विकसित महानगरों के लिए जीवनरेखा प्रदान करती हैं। नदियाँ सिंचाई के लिए पानी का मुख्य स्रोत हैं जो कृषि व्यवस्था को मजबूत बनाती हैं और फसलों की पैदावार में सहायक हैं। नदियों का उपयोग सस्ते परिवहन (जलमार्ग) और जलविद्युत उत्पादन के लिए किया जाता है। नदी के किनारे प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर पर्यटन स्थल राष्ट्रीय आय में योगदान करते हैं। भारत में गंगा, यमुना, कावेरी जैसी नदियों को देवी स्वरूप माना जाता है और इनकी पूजा की जाती है। ऐसी मान्यता है कि इनमें स्नान करने से पापों से मुक्ति मिलती है। नदियाँ केवल जल का स्रोत नहीं, बल्कि आस्था के केंद्र भी हैं। इनके किनारे ऋषि-मुनियों ने ज्ञान प्राप्त किया और अध्यात्म को बढ़ावा मिला। नदियाँ मनुष्य और धरती की प्यास बुझाती हैं। ये जैविक विविधता (biodiversity) के लिए महत्त्वपूर्ण जीवनधारा का कार्य करती हैं, जहां विविध प्रकार के पौधे और जीव-जंतु पाए जाते हैं। संक्षेप में नदियाँ जीवनदायिनी, पोषक, सांस्कृतिक और आर्थिक शक्ति का प्रतीक हैं। वे हमें सिखाती हैं कि जीवन में निरंतर प्रवाह और दूसरों को देने का भाव कितना आवश्यक है।

सन्दर्भ सूची :

1. विष्णुपुराण, चतुर्थ अंश, अध्याय 19, श्लोक 12, गीता प्रेस गोरखपुर, द्वादश संस्करण, पृ. 256
2. वही, द्वितीय अंश, अध्याय 3, श्लोक 18, पृ. 114
3. वही, पंचम अंश, अध्याय 6, श्लोक 7-9
4. शुक्ला, डॉ. हेमलता, पुराणों में नदियों का सांस्कृतिक स्वरूप, भारतीय विद्या भवन मुंबई, प्रथम संस्करण, 2009 पृ. 89
5. विष्णुपुराण, द्वितीय अंश, अध्याय 5, श्लोक 22, पृ. 12
6. वही, द्वितीय अंश, अध्याय 5, श्लोक 31
7. वही, चतुर्थ अंश, अध्याय 18, श्लोक 2
8. वही, तृतीय अंश, अध्याय 4, श्लोक 25
9. वही, तृतीय अंश, अध्याय 4, श्लोक 31
10. वही, चतुर्थ अंश, अध्याय 5, श्लोक 11
11. वही, द्वितीय अंश, अध्याय 3, श्लोक 12
12. वही, तृतीय अंश, अध्याय 4, श्लोक 28
13. वही, द्वितीय अंश, अध्याय 3 श्लोक 16
14. वही, तृतीय अंश, अध्याय 5, श्लोक 8
15. वही, तृतीय अंश, अध्याय 4, श्लोक 19
16. दीक्षित, प्रो.रामचन्द्र, सांस्कृतिक विश्लेषण भारत का पुराणिक भूगोल और जम्बूद्वीप व भारतवर्ष की नदियाँ मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली, तृतीय संस्करण 2014, पृ. 230
17. विष्णुपुराण, द्वितीय अंश, अध्याय 3, श्लोक 33, पृ.116
18. वही, तृतीय अंश, अध्याय 8, श्लोक 6, पृ. 173